ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, *RNI:UPBIL04292,REG.No.:561/2013-14, Vol.-I, No.-1,* **PP-142-144**, *YEAR 2014*

समाज में नारी की दोहरी भूमिका
(एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)

❑ डॉ0 भावना विमल पाण्डेय*

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान सामाजिक संरचना में नारी से अपेक्षित भूमिकाओं के संकुल का मूल्यांकन करना है, जिसमें वह समाज द्वारा प्रत्याशित व्यवहारों के सम्पादन में स्वयं को कैसे समायोजित कर रही है, पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया है। साथ ही साथ नारी समाज में जिन 'भूमिका संघर्ष' जैसे प्रस्थितियों का सामना कर रही है उस पर भी विचारणीय विमर्श का एक मुद्दा सामने आया है जिसमे एक प्रश्न उत्पन्न हुआ है और उसके प्रत्युत्तर सुझाव प्रस्तुत करने का प्रयास ही यह शोध पत्र है।

नारी सृजन और संस्कार की गंगोत्री है। मानव समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वह अपने मानवीय गुणों के कारण सदैव सम्मानीय और श्रद्धेय रही है। वर्तमान समय में नारी अपनी पहचान अपने गुणों के आधार पर चाहती है, क्योंकि इस बात की मान्यता बढ़ रही है कि स्त्री एवं पुरूष दोनों ही प्रबल लिंग पहचान द्वारा बाध्य है। हम देखे कि पितृ सत्तात्मक समाज में पुरूषों को लगता है कि उन्हे ताकतवर और सफल होना चाहिये। स्वयं को भावनात्मक रूप से प्रकट करना पुरूषोचित नहीं है। तब यह विचार आता है कि स्वतन्त्र होने के लिये स्त्रियों को पुरूषों की भॉति होना चाहिये। निः सन्देह यह इस विचार पर निर्भर है कि सच्ची स्वतन्त्रता अपनी इच्छानुसार बढ़ना है तथा विकास तभी संभव होगा जब कोई अन्याय न हो।

न्याय स्वतन्त्रता, समानता व बन्धुत्व जैसे उद्दात्त मूल्यों पर आधारित भारतीय समाज में धर्म जाति वंश व लिंग पर आधारित सभी प्रकार के असमानताओं को पूर्णतः समाप्त करने के पश्चात ही हम किसी भी प्रकार के सामाजिक विकास कल्पना कर सकते है। कार्ल मार्क्स ने भी कहा है ''किसी काल में समाज की प्रगति को जानना हो तो उस काल विशेष में महिलाओं की स्थिति पर नजर डालो''

आज एक नयी सहस्त्राब्दि के विहान की बेला में नारी 'एकादशी' के चौक से लेकर विदेश नीति के निर्माण मे अपनी भूमिका को बखूबी निभा रही है। यह कोई संयोग नहीं कि आज भारतीय नारी रेल से लेकर रेल मंत्रालय तक को पूरे आत्म विश्वास से चला रही है। यही नहीं वह अपनी कमाई से परिवार चला रही है, तो कहीं हजारो परिवारों की पालनहार बनी है। यह सुनहरा बदलाव एक दिन में नहीं आया वरन् इसको बंदिशों को तोड़ने और उसके प्रत्युत्तर में प्रताड़ित होने वाले दर्द का एहसास भी है। इसके पीछे वह बुद्धिमत्ता भी है जिससे स्त्रियों ने शैक्षिक व्यवसायिक अवसरों को न केवल पहचाना बल्कि आगे बढ़ने का जोखिम भी लिया।

इन्दिरागाँधी ने नारी मुक्ति के सन्दर्भ में बोलते हुये कहा है कि ''मैं स्त्री मुक्ति के पक्ष में हूँ ठीक उसी तरह जिस तरह मैं किसी पुरूष की स्वतन्त्रता के पक्ष में हूँ। स्त्री – पुरूष कंधे से कंधा मिलाकर ही एक बेहतर समाज और विश्व का निर्माण कर सकते हैं इसमे वर्ण, जाति, लिंग और दल का कोई सवाल नहीं होना चाहिये। 1838 के न्यूकैसल के महिला राजनीतिक संघ की तरफ से अपने देशवासियों के सम्बोधन में कहा गया ''हम आपसे आग्रह करते है कि हमारे साथ जुड़े हमारे पिताओं तथा पतियों की सहायता करे ताकि वे स्वयं को और हमें भी राजनीतिक शारीरिक और मानसिक गुलामी से दूर कर सके.....हमसे कहा गया कि महिलाओं का क्षेत्र उनका घर ही है और राजनीति का क्षेत्र पुरूषों के

*(रिसर्च एसोसिष्ट) श्री भगवान महावीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय फाजिलनगर, पावनागर कुशीनगर, उ0प्र0

लिये छोड़ दिया जाना चाहिये.....हम इसे नकारते है।''

नारी की प्रस्थिति का प्रश्न देश की आधी आबादी (49.65 करोड़) का प्रश्न है। अतः नारी आन्दोलन संवैधानिक हस्तक्षेप सामाजिक सुधार शिक्षा तार्किक प्रतिनिधित्व के माध्यम से नारी में बदलाव अनुभव क्षेत्र का विस्तार हुआ है, घर के बाहर का यर्थाथ उसे स्व अनुभव रूपेण प्राप्त हुआ है नारी अब यह तर्क व अनुभव के आधार पर समझी गयी है कि आधुनिक युग मे उन सभी कार्यो को नारी उसी गुणवत्ता से सम्पन्न कर सकती है जिसे पुरूष करता रहा है।

नारीयता समाज व संस्कृति के द्वारा नारी का विशिष्ट निर्माण है जिसके माध्यम से उसकी प्रस्थिति भूमिका, पहचान, सोच, मूल्व व अपेक्षाओं को गढ़ा जाता है। नारीयता के निर्माण की प्रक्रिया समाज की संस्थाओं सांस्कृतिक मूल्यों व व्यवहारों प्रथा रीतियों, लिखित व मौखिक ज्ञान परम्पराओं धार्मिक अनुष्ठानों व नारी अपेक्षित विशिष्ट मूल्यों से स्थापित होती है। जन्म से ही बालक व बालिका के समाजीकरण की प्रक्रिया इस तरह से संचालित होती है कि बालक को साहसिक, बौद्धिक, आक्रमक कार्यो के प्रति ढालने का स्वरूप बनाया जाता है।

बालिका को क्षमा भय, लज्जा सहनशीलता सहिष्णुता नमनीयता के गुणों को आत्मज्ञात करने की शिक्षा प्रदान की जाती है। यह प्रक्रिया बालक व बालिका के परिवेश से इस तरह जोड़ दी जाती है कि अन्ततः स्व की पहचान व अन्य लोगों की परिभाषा के आधार पर व्यवहार करना सामान्य हो जाता है। प्रदत्त अपेक्षाओं से भिन्न व्यवहार असामान्य कर दिया जाता है। नारी परिवार और सामाजिक संरचना की ऊर्जा स्त्रोत है। नारी को लौकिक जीवन में पुरूष की तुलना में अधिक समर्थ एवं कुशल माना गया है। वर्तमान सन्दर्भ में विभिन्न विरोधी शक्तियों के माध्यम से नारी की प्रस्थिति के सकारात्मक व नकारात्मक दोनो प्रकार के स्वरूप उभर कर आये है। भारतीय सन्दर्भ में नारी को एक साधारण श्रेणी में प्रस्तुत करने के साथ ही उसकी विवेचना एवं विश्लेषण में सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश की कड़ी को समझना भी आवश्यक है। भारतीय नारी परिवार को तोड़कर स्वतन्त्रता व शक्ति को प्राप्त करने के लिये तत्पर नहीं है। इसी कारण व शिक्षा व व्यवसाय के माध्यम से ज्ञान सूचना व आर्थिक आधार प्राप्त करके भी गृहस्थ जीवन के भावनात्मक व संबधात्मक परिधियों में बंधी हुयी है।

संस्था के रूप में परिवार का कोई उचित विकल्प समाज में उपलब्ध या स्वीकृत नहीं है। अतः ग्रहस्थ कार्यभार को बिना त्यागे भारतीय नारी ने घर के बाहर व्यवसायिक कार्य को भी अपनाया है। उसकी भूमिकाओं के विस्तार ने उस पर दोहरे मानदण्ड थोपे हैं। एक अन्य भार उसके शरीर से जुड़े सौन्दर्य बोधक अपेक्षाओं से जुड़ा हुआ हैं। इन दोनों ग्रहस्थ व व्यवसायिक के साथ – साथ उसे अपने शरीर व उससे जुड़े सौन्दर्य बोधक अंगों के परिष्कारों में भी समय व शक्ति देनी पड़ती है।

भारतीय पुरूष की मानसिकता में इन परिवर्तित परिस्थितियों में गृहकार्य में योगदान का मान्य व समाज स्वीकृत पक्ष प्रत्यक्ष रूप से अथवा संस्कृति सम्मत आधार पर निर्मित नहीं हुआ है। सामजस्य व समझौते की परिस्थितियों में प्रायः नारी को अपने स्वं की बलि देनी पड़ती है। धर्म व साहित्य ने भी नारी को विशिष्ट गुणों का निर्माण करके उसे एक व्यवास्थित स्वरूप प्रदान किया है। जिन्हें संस्कार व सामाजीकरण के माध्यम से नर व नारी दोनो ही आत्मज्ञात कर लेते है। नारी सन्दर्भ में मूल्यों व प्रतिमानों का ऐसा स्वरूप उभरकर आया है जिसे परम्पराओं का आधुनिकीकरण कहा जा सकता है। इसीलिये भौतिकशास्त्र में पी0एच0डी0 करने वाली छात्रा को अच्छे वर प्राप्ति के लिये सोमवार का व्रत रखना असंगत नहीं लगता। करवाचौथ का व्रत पढ़ी लिखी व प्रगतिशील कहलाने वाली स्त्रियां भी रखती है।

पत्नी यह व्रत अपने पति के सुख के लिये रखती है जबकि पुरूष द्वारा पत्नी के सुख व लम्बी उम्र के लिये व्रत का कोई प्रचलन नहीं है।

वे औरों के लिये थकती है, मुस्कुराती है, दौड़ती है, रोती है पर उनके लिये कौन क्या करता है ? गृहणियों की उदासी पति बच्चों की चिन्ता, उसकी भूमिका से जुड़ जाते है। गृह कार्य तो दिनभर का होता है, प्रातः से लेकर रात्रि तक दफ्तर के कार्य की अवधि समायानुसार परिभाषित है, छुट्टियां भी मिलती है और सेवानिवृत्त भी होती है, गृहणी तो जीवन भर कार्य करती है वह रिटायर नहीं होती और बीमार होने पर भी घर के काम को करती है, उस पर तथ्य यह है कि उसके कार्य का कोई मूल्य नहीं आकौ जा सकता। यह तो उसके नारी होने से जुड़ा माना जाता है।

वैश्वीकरण के कारण महिला प्रस्थिति एवं भूमिका परिवर्तन पर विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था जो कि पूर्णतया आर्थिक सम्बन्धों से निर्मित हो रही है उसमे 'भूमिका समन्वय' पर पुनः विचार की आवश्यकता है। अन्यथा हम विश्वव्यापी सामाजिक – आर्थिक सम्बन्धों के तीव्रतम परिवर्तन के कारण उन सभी समस्याओं का सामना करने को तैयार रहे जैसा कि युरोप के कई देशो में किया जा रहा है। जिसमे तलाक, बच्चो में समाजीकरण का अभाव, वृद्ध को बोझ समझने की प्रवृत्ति, परिवार रूपी संस्था पर खतरा लिविंग रिलेशन शिप (बिन फेरे हम तेरे) जैसी प्रमुख समस्या हमारे लिये चुनौती बनकर खड़ी हो रही है। अन्त में इस चुनौती के प्रत्युत्तर के सुझाव में कहना चाहती हूँ कि सभी परिवर्तनों के बाद भी आज की नारी अपनी प्रस्थिति एवं भूमिका में सार्मजस्य तभी बैठा सकती है जब वर्तमान सामाजिक – आर्थिक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुये 'भूमिका सम्बन्ध' को पुनः परिभाषित किया जाय। यह परिभाषा पुरूष एवं महिला दोनों के संदर्भ में होनी चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. *N.W.V.C. Report* (चाणक्य सिविल व सर्विसेजेइडे अप्रैल 2004)
2. कर्मठ महिलाये (रितु मेनन)
3. नारीवादी राजनीति (संघर्ष एवं मुद्दे) (साधानार्थ निवेदिता)
4. समाजशास्त्रीय सिद्धान्त (नरेन्द्र सिंह)
5. *Economictimes*
6- *Times of India*
7- *Hindustan Times*
8- *Yojana*
9- *Kurukshetra*
10- *Mukta*
11- *Aaj*
12- *Dainik Jagarn*
13- *Rashtriya Sahara*
14- *NCERT Social and Structural Change in India*